Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

निराला के रचना संसार और दलित विमर्श

डॉ. मंजुलता चौधरी*

* सह. प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, अलोट (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – हिन्दी साहित्य के छायावादी निराला संघर्ष के कवि माने जाते है निराला का जन्म 21 फरवरी 1899 को बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिशादल नामक तहसील में हुआ थां निराला का पैतृक गॉव गढ़कोला था जो उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित है। निरालाजी की प्रारम्भिक शिक्षा बंगाल में बांग्ला भाषा में हुई थी। यह बांग्ला भाषा के कवियों से बहुत प्रभावित थे। निराला का बचपन गढ़कोला और महिषादल दोनों जगह पर व्यतीत हुआ। जिसके कारण इनके व्यक्तित्व पर दोनों जगहों का प्रभाव पड़ा। सन् 1918 में देश में फैली महामारी के प्रकोप इनके परिवार पर कहर बन कर टूट पड़ा। इस महामारी ने इनके परिवार से पिता, चाचा, भाई, भाभी, पत्नी, और पुत्री को निगल लिया। जब इनकी पत्नी की मुत्यु हुई तब निराला महिषादल में थे। 23 वर्षीय निराला चाचा के चार पुत्रों तथा अपने पुत्र के पालन पोषण का भार आ गया। निराला ने अपने पुत्र को डलमउन्नाना–नानी के पास छोड़ कर भतीजों के साथ बंगाल चले गये। निराला का पूरा जीवन संघर्ष में बीता। निराला के शब्दों में –सोलह सत्रह साल की उम्र में भाग्य में जो विपर्यय शुरू हुआ वह आज तक रहा। लेकिन मुझे इतना ही हर्ष है कि जीवन के उसी समय में मै जीवन के पीछे दौड़ा, जीव के पीछे नहीं।

अपने जीविकापार्जन के लिए निराला ने महिषादल में नौकरी कर ली किन्तु अपने स्वभाव के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी। अन्य कुछ साधन नहीं होने के कारण निरालाजी साहित्य लेखन करने लगे। निराला की लिखे हुए लेख उस समय की किसी भी पत्रिका में नहीं छपते फिर भी निराला ने अपने साहित्य प्रेम को नहीं छोड़ा।सन् 1922 में वे समन्वय के संपादक मडण्ल में सम्मिलित हो गए और रामकृष्ण मिशन के साधुओं के साथ रहने लगे। यहीं पर उन्होनें अद्वैत दर्शन का गहन अध्ययन किया। जिसका प्रभाव इनकी रचनाओं में हमें देखने को मिलता है। सन् 1923 ई. में सेठ महादेव प्रसादजी के संपादकत्व में कलकत्ता से साप्ताहिकपत्र **मतवाला** का संपादन प्रारम्भ हुआ तो सेठ महादेव प्रसाद ने निराला को संपादक मंडल में रखा। निराला ने ही **मतवाला का मोटो** बनाया था। मतवाला के चाबुक स्तम्भ निराला बिना किसी हिचक के निर्भीकता पूर्ण हिन्दी संसार के नामचीन लेखकों की रचनाओं में खटकने वाली बातों पर समालोचना लिखते थे। निराला की इस समालोचना से सरस्वती पत्रिका भी नहीं बची। जब सरस्वती पत्रिका पर आघात होने लगे तो आचार्य द्विवेदीजी सेरहा नहीं गया। ओर उन्होनें जिन जिन अंकों में आलोचना छपी थी इन सभी अंकों को संषोधित कर 'दूसरे का छिद्रन्वेषण करने से पहले अपनी ओर देख लेना चाहिए' इस नोट के साथ निरालाजी को भेज दया।इस पत्र को पड़ने के बाद निरालाजी ने सरस्वती पत्रिका के लिए कोई टिप्पणी नहीं की। निरालाजी लगभग एक वर्ष तक मतवाला में कार्य करते रहे। इस अल्पकाल में निरालाजी ने साहित्य के जगत में अपनी अलग ही छवि बना ली। हम यह कह सकते है कि मतवाला ने निरालाजी को एक नया जन्म दिया।

निरालाजी मुक्त छन्द के प्रेणता हैं उनका मानना है कि मनुष्य की मुक्ति की तरह कविता की मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के अनुशासन से अलग होना है। उन्होनें यह बात परिमल की भूमिका में कही है। उनके काव्य की विकास यात्रा से उनके व्यक्तित्व की जानकारी मिलती हैं निरालाजी ने न केवल परम्पराओं से विद्रोह किया बल्कि स्वयं अपनी उपलब्धियों से भी जो कालान्तर में परम्परा होती से भी विद्रोह किया है। निरालाजी के स्वभाव में विद्रोह का होना, उनकी रचनाओं में हमें दिखाई देता हैं। निरालाजी का काव्य विविधता को लिए हुए है। निरालाजी का रचना संसार विशाल और समृद्ध हैं जिसमें कहानी, उपन्यास, निबन्ध, काव्य कविता आदि है। रचनाऐं:–

कविता:– अणिमा, बेला, नए पत्ते,गीतिका, कुकुरमुत्ता, अर्चना, आराधना, गीत गुन्ज, अनामिका।

लम्बी कविता :– सरोज स्मृति, तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा।

उपन्यास:– बिल्लेसुर बकरिहा, कुल्लीभाट, निरूपमा, अप्सरा, प्रभावती, महाराणा प्रताप।

निबन्ध:– साहित्य और भाषा, सोयी हुई जातियॉ पहले जगेंगी।

कहानी :– पद्मा और लिली, चतुरी चमार, हिरनी, भेड़िया,दोघड़े, कंजूस और सोनी, सौदागर और कप्तान, शिकार को निकला शेर,प्रेमपूर्ण प्रसंग, सखी, क्या देखा, सुकुल की बीवी,सफलता, भक्त और भगवान, न्याय,गधा और मेंढक।

इसके अलावा निरालाजी ने गजलों की भी रचना की। उनकी सामाजिक आलोचना व्यंग्य के रूप में मिलती है। इनके द्वारा रचित सरोज स्मृति हिन्दी का श्रेष्ठ शोक गीत है यह निरालाजी की आत्मकथात्मक रचना है।राम की शक्ति पूजा लिखने की प्रेरणा इन्हें रविन्द्रनाथ टेगौर की लम्बी रचना से मिली। राम की शक्ति पूजा पत्नी प्रेम की कविता है। तुलसीदास कविता में स्वाधीनता की भावना मिलती है। इस कविता में कवि ने अंधकार को दूर करने की चेष्टा की है।निराला ने गद्य और पद्य दोनों ही प्रकार की रचनाऐं लिखी है। निराला के रचना संसार में विद्रोह का पुट अधिक मिलता है।

दलित साहित्य की परिभाषा के संबंध में यह माना जाता है कि जो शोषित या पीड़ित हो। हिन्दी साहित्य में दलित चेतना का वैचारिक आन्दोलन

की धारा प्राचीन समय से चली आ रही है। अवन्ति प्रसाद ने दलित उसे माना है जिसका दलन हुआ हो,जिसे दबाया गया हो या जिसका हक छीना गया हो। इस अर्थ में हिन्दू मुसलमान ईसाई आदि सभी धर्मो में दलित मौजूद है। वर्तमान में जिसे दलित समझा जाता है इसे अछूत या अस्पृष्य कहा जाता था।साहित्य में दलित वर्ग की उपस्थिति बौद्धकाल से मिलती है दलित को हिन्दू समाज में वर्ण व्यवस्था में सबसे नीचे रखकर उन्हें सभी अधिकारों से वंचित रखा गया।और दलितों को अपने ही धर्म में अस्पृष्य और अछूत कहा गया। दलित साहित्यकारों में अनेकों ने दलित की पीड़ा को कविता की शैली में प्रस्तुत किया है। कुछ विद्धान 1914 में सरस्वती पत्रिका में हीरा होम द्धारा लिखित अछूत की षिकायत को पहलीदलित कविता माना है। कुछ विद्धान स्वामी अछूतानन्द हरिहर को पहला दलित कवि मानती है।

दलित साहित्य भारतीय लेखन की एक विद्या है। जो जाति आधारित उत्पीड़न और व्यवस्थागत भेदभाव के सदंर्भ में रूढ़ियों से दलित समुदाय के जीवन अनुभवों और संघर्षो पर केन्द्रित हैं साहित्य मे ंदलित जीवन की समस्याओं को लेकर जो आन्दोलन चला उसका सूत्रपात दलित पैंथर से माना जाता है। दलित साहित्य की शुरूआत मराठी से मानी जाती है। जहॉ दलित पैंथर आन्दोलन के दौरान बड़ संख्या मे दलित जातियों से आये रचनाकारों ने आम जनता तक अपनी भावनाओं, पीड़ाओं, दुखों दर्दो को कविताओं, निबन्धों, जीवनियों, कटाक्षों, व्यगों, कथाओं आदि के माध्य से पहुचाया। दलित शब्द एक और जहॉ शोषित पीड़ित समुदाय की वेदना, पीड़ा और छटपटाहट को अभिव्यकत करता है वही दूसरी और यह विद्रोह और मुक्ति की प्रेरणा भी देता है। एक नऐ समाज की आकांक्षा जो समानता, स्वतन्त्रता और बन्धुत्व पर आधरित हो।

निरालाजी ने दलितों के प्रति अपनी व्यथा को गद्य एवं पद्य दोनों ही प्रकार रचनाओं में व्यक्त किया है जो इस प्रकार हैं।

निराला की कविताओं में दलित संवेदना– निराला ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी संवेदना को व्यक्त किया है। उनकी कविता **कुकुरमुत्ता, तोड़ती पत्थर, विधवा, भिक्षुक** वे रचनाऐं है जिनमें निरालाजी ने दलितों के प्रति हो रहे संघर्ष, तिरस्कार, अन्यायपूर्ण व्यवहार, सामजिक व्यवस्था, असंवेदनशील व्यवहार और रूढ़िवादिता को बताया है। दलित मानव की पीड़ा ने उनके संवेदनशील हृदय को करूणा से भर दिया था उच्च वर्गकी विलासिता एवं निम्न वर्ग की दीनका को देखकर वे अपने हृदय में गहन, वेदना, टीस एवं छटपटाहट का अनुभव करते रहे। उनके काव्यका मूल स्वर विद्रोह और क्रांतिकारीभावनाओं से युक्त है। सामाजिक विषमताओं के कारण मानव कितना दयनीय हो जाता है।निराला के काव्य में स्वतन्त्र अस्तित्व का तूफान हमें देखने को मिलता है। जीवन की कठोर वास्तविकता से जुझ कर **कुकुरमुत्ता** उगता है और अपने व्यतित्व को बनाए रखता है। उनकी रचना में कुकुरमुत्ता को शोषितों का प्रतीक और गुलाब पूजीं वर्ग का प्रतिक बना कर वर्ग संघर्ष पर तीखा प्रहार किया है।

इनकी कविताओं की कुछ पंक्तियॉ :–

अबे सुन बे गुलाब
भूलमत, जो पाई खुशबु रंगों आब,
खून चूसा खाद का तूने अषिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट

निराला ने अपनी कविता **तोड़ती पत्थर** में दलित चेतना को उजागर किया है शोषण से मुक्ति, सामाजिक असमानता और अन्याय के विरूद्ध अपनी आवाज को उठाया है। उस कविता में शेषित और दलित नारी का चित्रण मिलता है। दलित नारी की स्थिति को उन्होने गरिमापूर्ण स्थान दिलाने के लिए और उनके आत्मसम्मान के लिए संघर्ष की प्रेरणा जगाई है। –

देखते देख मुझे तोएक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्नातार
देख कर कोइ नहीं देखा
मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं
सजा सहज सितार

इसी प्रकार निराला ने **विधवा** कविता के माध्यम से विधवा की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है विघवा के प्रति भारतीय समाज में रूढ़िवादिता और संवेदनाहीनता की जो विकृत मानसिकता है। उसे उजागर किया है तथा समाज में होने वाले अत्याचारों और शोषण का चित्रण किया हैं :–

कौन उसे धीरज दे सके
दुख का भार कौन ले सके
यह दुख वह जिसका नहीं कुछ छोर है
दैव अत्याचार कैसा किसी ने अश्रुजल
या किया करते रहे सबका विकल।

निराला की कहानियों में दलित संवेदना– निराला की कहानियों में हमें शोषित वर्ग, किसानों और महिलाओं की समस्या देखने को मिलती है। शोषित वर्ग के प्रति समाज में फैली असमानता को इनकी कहानियों में पर्याप्त स्थान मिला हैं निराला का मानना है कि समाज में सुधार तब ही संभव है जब उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाए। अंधविश्वास और कुरीतियों के खिलाफ निराला ने अपने लेखन से आवाज उठाई है। तथा दलितों के प्रति संवेदना का भाव मिलता है। निराला की प्रमुख कहानियॉ हैं– चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, लिली, देवी, श्यामा, क्यों नहीं। इन सब कहानियों में दलितों के संघर्ष और शोषण की चित्रण मिलता है।

चतुरी चमार– चतुरी जो एक चमार है। वह अपने ही समाज के दुर्व्यव्यवहार से गुजरता है।उसकी यह कहानी जातिवाद और वंचित वर्ग की आलोचना प्रस्तुत करती है। चतुरी जमींदारों और ऊॅचे वर्गो की गिरफ्त में है वह बार बार उबरनें की कोशिश करता है किन्तु उबर नहीं पाता है। निराला का मानना है कि चमार दबेंगे और ब्राह्मण दबाऐंगें। निराला समाज के निचले तबके के पक्षधर थे।

लिली–इस कहानी में लिली के माध्यम से महिलाओं की स्थिति का चित्रण मिलता हैं किस प्रकार महिला की स्वतन्त्रता और उसके अधिकारों का हनन होता है। यह कहानी सामाजिक बदलाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाती है।

क्यों नहीं– इस कहानी में निरालाजी ने समाज में व्याप्त संकीर्णता, भेदभाव और पांखड़ पर तीखा व्यग्य किया है। यह कहानी सामाजिक समानता पर बल देती है।

सुकुल की बीवी– इस कहानी में समाजिक असमानता के साथ साथ जातिवाद के मुद्दों पर भी प्रहार किया है। इसमें सुकुल नामक दलित व्यक्ति की बीवीकी स्थिति का चित्रण है जो सामाजिक असमानता और जातिवाद से पीड़ित है।वह जातिवाद केकारण तिरस्कृत होती है और अपने ही समाज में स्थान पाने के लिए संघर्ष करती है।

देवी– इस कहानी में गरीबी ओर सामाजिक उत्पीड़न के बीच मानवीय संवेदना का चित्रण किया गया है। स्त्री की लाचारी और उसके संघर्षशील

चेतना का चित्रण इस कहानी में मिलता है। इस कहानी की पात्रा पगली है जो समाज की शोषणकारी और समाज की दयनीय स्थिति का प्रतीक है। वह गूंगी है लेकिन उसकी आँखों में और उसके कृत्यों में सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ एक अवाक् विरोध है। पुरूष प्रधान समाज में नारी के प्रति शौषण का और रूढ़िवादिता का विरोध इस कहानी की प्रमुखता है।

श्यामा–निराला की इस कहानी में माध्यम से सामाजिक क्रांति और सांमतों के प्रति विरोध का भाव मिलता है। इस कहानी में एक ब्राह्मण लड़का एक हरिजन लड़की का विवाह का चित्रण मिलता हैं। जिस समय की यह कहानी है। उस समय इस प्रकार का विचार क्रांतिकारी विचारों की तरह ही था। निराला की कहानियाँ गरीब जनता के सुख दुख और आकांशा स्वप्नों और उत्पीड़न का चित्रण है।

निराला के कथा साहित्य में कई महत्वपूर्ण कहानियॉ है जो समाज की असमानताओ, शोषण और संघर्ष को प्रमुख प्रस्तृत करती है। उनकी कहानियाँ समाज के किसी ना किसी पहलु पर प्रकाश डालती है। इनकी कहानियों में दलित, गरीब, और शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखती है। यह निरालाजी के यर्थाथवादी दृष्टिकोण को उजागर करती है।निरालाजी ने समाज में व्याप्त संकीर्णता, भेदभाव, पाखंड तीखा व्यग्यं किया है।

निराला के उपन्यासों में दलित चेतना– निराला की शैली में यथार्थवाद के दर्शन होते हैं इन्होंने दलित चेतना और सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। वे शोषित, उपेक्षित और निम्न वर्ग के पात्रों को मुख्य धारा में लाकर जातीय रूढ़ियों और आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाना चाहते थे। दलित चेतना से संबंधित निराला के उपन्यास है। कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा।

कुल्लीभाट– कुल्ली एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति है जिसका जीवन सामाजिक यथार्थ और संघर्ष को बताता है। यह उपन्यास छुआछुत, धार्मिक कट्टरता, समाज के निचले तबके तथा मध्यम वर्ग की वास्तविक स्थिति को बताता हैं इस उपन्यास में दलित चेतना और सामाजिक यथार्थ का प्रबल चित्रण है।

बिल्लेसुर बकरिहा– यह उपन्यास गरीबी और समाजिक उत्पीड़न के यथार्थवादी चित्र को प्रस्तुत करता है। बिल्लेश्वर एक गरीब ब्राह्मण है। जो अपना गुजर बसर करने के लिए एक बकरी पालता है। ब्राह्मण जाति के लोग बकरी पालने पर उसका जाति से बहिष्कार कर देते है। वह सामाजिक धूर्तता और रूढ़ियों का शिकार होता है। निरालाजी का यह उपन्यास यथार्थवादी, व्यग्यांत्मक, सांमती मानसिकता पर करारा व्यग्यं है।

चोटी की पकड– निरालाजी का यह उपन्यास राजनीति और नैतिक पतन का चित्रण करता है। इस उपन्यास का पात्र मुन्ना बाँदी के माध्यम से समाज में व्यापत गरीबी और शोषण तथा सामंती विलासिता को उजागर किया है। इसमें राजाओं की विलासिता, फिजूलखर्ची तथा यथार्थवादी परम्परा का चित्रण मिलता है।

निराला के निबन्धों में दलित चेतना – निराला ने अपने निबन्धों मे भी दलित चेतना व्यक्त की हैं।निराला रचनावली के छठे खण्ड में हमें निबन्ध के बारे में जानकारी मिलती है।

वर्णाश्रम की वर्तमान स्थिति–निराला ने निबन्ध वर्णाश्रम की वर्तमान स्थिति में भारतीय समाज में वर्णाश्रम धर्म पर विचार करते हुए जाति पाति की आलोचना की है। निराला ने उस समय की सामाजिक विसंगतियो को उजागर किया हैं जहॉ उन्होनें धार्मिक आडम्बरों और जाति आधारित भेदभाव का खण्डन करते हुए मानवीय समानता और सामाजिक यथार्थ पर जोर दिया है।निराला ने जाति प्रथा के विरूद्ध तीखे प्रहार किए है। तथा कुलीनता व अभिजात्य वर्ग के अंहकार पर चोट की हे। इनके निबन्धों में वर्ग चेतना में शोषक वर्ग के खिलाफ शोषितों, निर्धनों और उपेक्षितों के प्रति गहरी सहानुभूति और सांमती पूजीवादी व्यवस्था के प्रति विद्रोह को प्रकट करती है।

हिन्दुओं का जातीय संगठन–निरालाजी ने हिन्दु समाज की जाति व्यवस्था और उसके परिणामों पर विचार किया है। इस निबन्ध में उन्होंने जाति व्यवस्था के कारण हिन्दू समाज में उत्पन्न हुई समस्योंऔर इसके पतन के कारणोंपर चर्चाकी है। निरालाजी ने हिन्दू समाज से जाति व्यवस्था को छोड़ कर एक जुट होने का आग्रह किया है।

हमारे समाज का भविष्य–इस निबन्ध के अनुसार निरालाजी का कहना है कि भारतीय समाज का भविष्य उज्ज्वल है लेकिन इसके लिए समाज को अपने अंदर के दोषों को दूर करना होगा। उन्होनें कहा कि समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था, अंधविश्वास, कुरीति अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने से ही समाज का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

सनातन धर्म और अछूत– निराला जी ने सनातन धर्म और अछूत निबन्ध में दोनों के बीच के संबंधों पर विचार किया है। निराला ने सनातन धर्म के मूल्यों और आदर्शो को अपनाकर अछूतों के प्रति समाज की दृष्टि को बदलने का आव्हान किया है। निरालाजी का मानना है कि सनातन धर्म में अछूतों को समाज से अलग करने की कोई स्थान नहीं है। प्रेम, दया, सहनुभूति और समानता को अपनाकर अछूतों को समाज में समानित स्थान दिया जा सकता है।

सामाजिक पराधीनता–निरालाजी ने इस निबन्ध में सामाजिक पराधीनता पर विचार करते हुए कहा है कि सामाजिक पराधीनता एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति या समाज अपने अधिकारों और स्वतन्त्रता से वंचित होता है। उन्होंने कहा कि सामाजिक पराधीनता के कारण व्यक्ति का विकास नहीं हो पाता है।

महात्माजी और हरिजन–महात्माजी ने हरिजनों कोसमाज में सम्मानित स्थान दिलाने के लिए आंदोलन चलाया था।उन्होंने हरिजनों को अपने घर बुलाकर भोजन करवाया। यह समाज में सम्मान दिलाने की दिशा में आवश्यक कदम था। निरालाजी ने महात्मा गांधी के हरिजन आन्दोलन को एक सामाजिक क्रांति बताया और कहा कि यह आन्दोलन समाज को एक जुट करने और हरिजनों कोसम्मान दिलाने में मदद करेगा।

महात्माजी की भीषण प्रतिज्ञा– इस निबन्ध में निरालाजी ने महात्मा जी क आन्दोलनो के बारे में विचार किया है उन्होंने महात्मा जी के आन्दोलनों को भीषण और अद्वितीय बताया है। उनका कहना है कि महात्माजी ही भारत को विश्व में नई दिशा प्रदान करवा सकते है। महात्मा गांधी की प्रतिज्ञा समाज में एक नई जागृति ला सकती है। तथा लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा प्रदान कर सकती है।

मनुष्य गणना और जातपात– इस निबन्ध में निरालाजी ने सामाजिक न्याय, समानता और मानवव अधिकारों के मुद्दों पर चर्चा की है। समाज को जातिगत भेदभावों और मानव संख्या के आधार पर जात पात में बॉट दिया है। मनुष्य को मनुष्य से अलग कर दिया है। इन्होंने कहाकि मनुष्य गणना में जात पात का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। बल्कि मनुष्य को उसके गुणों और कर्मो के आधार पर आंका जाना चाहिए। जात पात की व्यवस्था को खत्म करने पर ही समाज की विकास सम्भव है।

निरालाजी ने अपने निबन्धों और लेखों के माध्यम से सामाजिक

विषमता और दलित विमर्श पर बड़ी निर्भीकता से लिखा है। इनके जितने भी निबन्ध सामाजिक चेतना पर है। उनमें सब दलितों की स्थिति के बारे में मिलते है। जातिवाद, वर्णव्यवस्था, अधूत आदि पर विचार करते हुए निरालाजी इन्हें समाज में सम्मान दिलाने के लिए अपने विचारों के माध्यम से संघर्ष करते दिखाई देते है।

निष्कर्ष –सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख चार स्तम्भों में से एक थे। इनका स्वभाव उग्र था। इनका पूरा जीवन साहित्य की रूढियों, सामाजिक विषमताओं और परम्पराओं के खिलाफ सघंर्ष में बीता। इन्होंने कविता को छन्दों मुक्त नहीं किया अपितु मानव चेतना को भी हर प्रकार के शोषण और बन्धन से मुक्त कराने का प्रयास किया। निरालाजी यथार्थवादी और जमीन से जुडे कवि थे। इनके काव्य का सहज स्वर उदात्त है निरालाजी ने बाल्यकाल से ही बंगभंग आंदोलन, स्वदेशी आन्दोलन, किसान आन्दोलन, को देखा तथा अनेक संघर्षो का नेतृत्व भी किया। इस कारण ही इनके व्यतित्व व कृतित्व पर अनका गहरा प्रभाव पडा निरालाजी की रचनाओं में हमें युगीन परिवेश व परिस्थतियॉ देखने को मिलती है।

निराला के काव्य में जो क्रांतिकारी स्वर मिलता है उसका आधार गॉव की सामाजिक रूढिवादी परम्परा, जात पात, भेदभाव और सामंती व्यवस्था रही है। वे यह मानते थे कि जब तक जात पात का विनाश नहीं होगा तब तक राष्ट्र का विकास असंभव है।जिस प्रकार सामाजिक रूढियों के कारण शुद्र दास बन गये उसी प्रकार स्त्री पराधीनता के कारण दासी मानी जाती है। निराला जिस प्रकार समाज से उंच नीच और जाति पाति प्रथा केा मिटना अपना राजनैतिक कर्त्तव्य समझते थे उसी प्रकार स्त्री के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आन्दोलन का अभिन्न अंग मानते है। उनकी भिक्षुक, दीन, तोडती पत्थर, विधवा कविताओं में हमें स्त्री के अधिकारों के प्रति संघर्ष का चित्रण मिलता है।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नातार,
देखकर कोइ नहीं
देखा मुझे एस दृष्टि से,
तो मार खा रोई नहीं।(तोडती पत्थर)

निरालाजी सिद्धांतवादी और सहासी कवि और लेखक थे। वह हमेशा संघर्ष के पंथ पर चले। हिन्दी साहित्य में उनके आक्रोश और विद्रोह, उनकी करूणा और के प्रतिबद्धता की कई मिसालें उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है।

'निराला का साहित्य सहानुभूति और सामाजिक न्याय का वह पुल है जिसमें हिन्दी में दलित चेतना की वैचारिक जमीन तैयार करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. https//doc manuued.in- Maulana Azad National urdu university manvu.
2. https// narakas.rajdhosha gov.in.
3. https//sunilasramanpu; wardpress.com.
4. https//wwwhindwi.org.surykant tripathi nirala.
5. https//ncert.nic in.
6. निराला– बिल्लेसुर बकरिहा

****